NEVER TRUST A STRANGER

STORY FROM PANCHTANTRA

अजनबी पर कभी भरोसा न करें

पंचतंत्र की कहानी



Never Trust a Stranger

अजनबी पर कभी भरोसा न करें

पंचतंत्र की कहानी



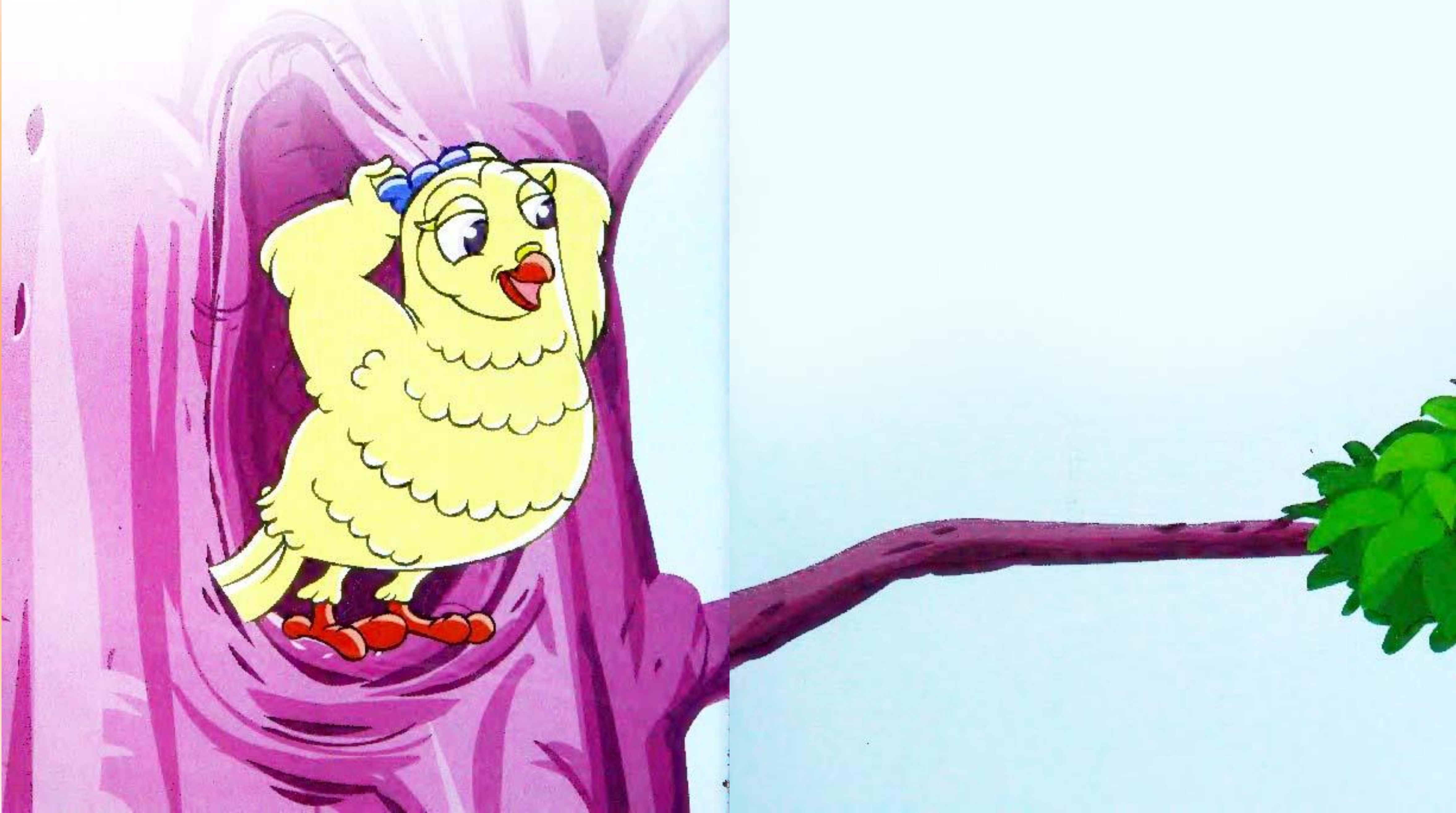
Tales from Panchatantra

Once upon a time, deep in the forest, there lived a partridge.

This partridge had made her home in a hollow at the base of a tree.

एक समय की बात है, घने जंगल में एक तीतर रहता था.

तीतर ने एक पेड़ के ताने के एक खोखले कोटर में अपना घर बनाया था.



One day, the partridge decided to go and visit her friend the crow. The crow lived near a cornfield.

“The two of us will have a very pleasant time eating the fresh new corn,” she thought.

So off she went to visit the crow.

एक दिन, तीतर ने अपने दोस्त कौवे से मिलने जाने का फैसला किया. कौआ, मक्के के खेत के पास रहता था.

"हम दोनों ताजा नया मक्का खाकर खूब मज़ा करेंगे," उसने सोचा.

फिर वो कौवे से मिलने गया.



When the partridge was away, a rabbit came hopping by her house.

The rabbit saw that the house was empty and decided to move in. Soon he made himself very much at home.

जब तीतर अपने घर से दूर था, तब एक खरगोश उसके घर के पास उछलता-कूदता आया.

खरगोश ने तीतर का घर खाली पाया और उसने उस घर में रहने का फैसला किया. जल्द ही उसने उसे अपना घर बना लिया.



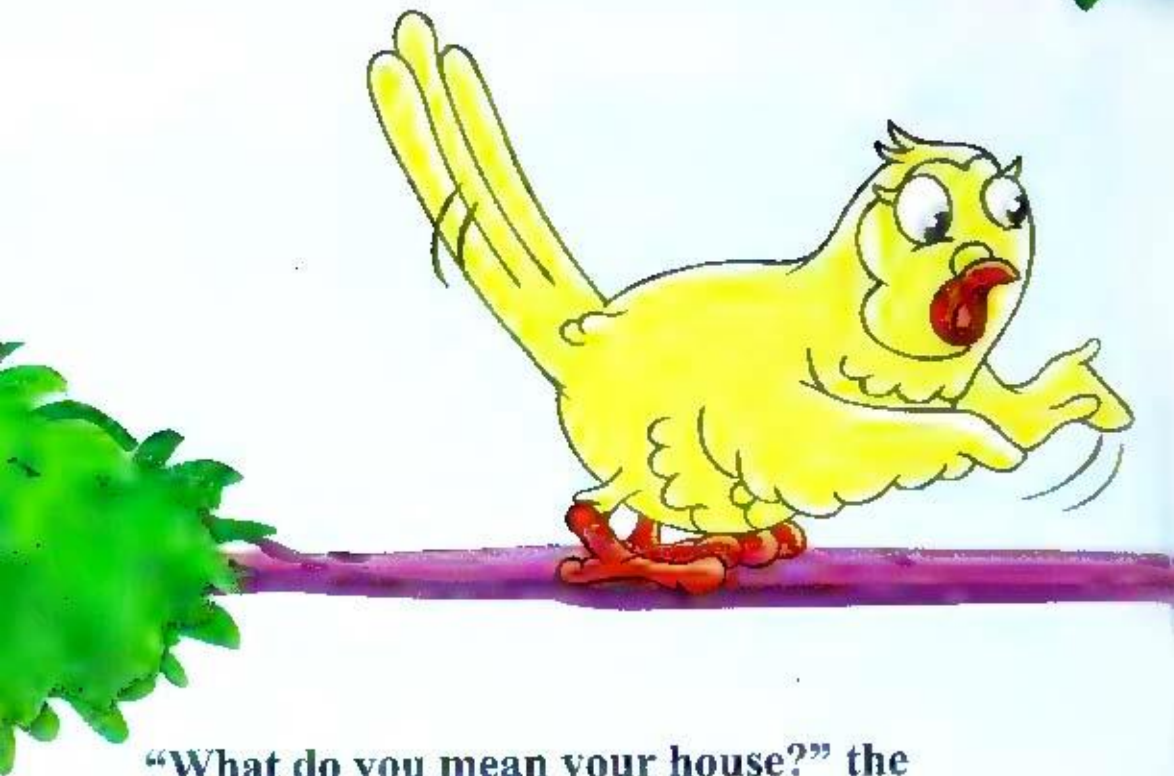
The partridge came back from her visit, and found the rabbit staying in her house.

"Who are you, and what are you doing in my house?" asked the partridge.

जब तीतर अपनी यात्रा से वापस लौटा तो उसने खरगोश को अपने घर में रहते हुए पाया.

"तुम कौन हो, और मेरे घर में क्या कर रहे हो?" तीतर ने पूछा.





“What do you mean your house?” the rabbit asked angrily.

The partridge grew very angry. “This is my house! I have lived here all my life and you are an impostor,” she screamed.

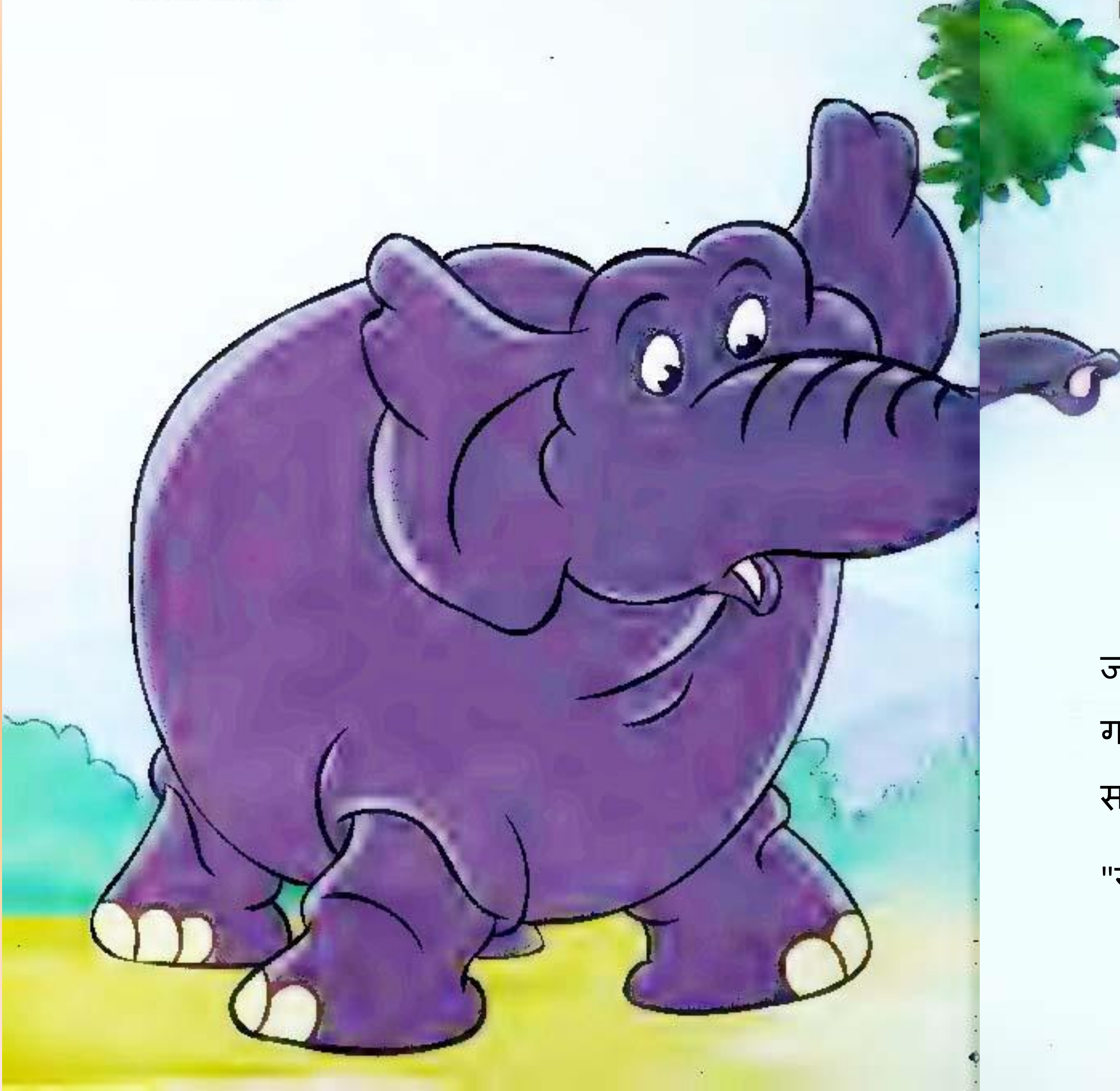
"तुम्हारा मतलब क्या है तुम्हारे घर से?" खरगोश ने गुस्से से पूछा.

तीतर बहुत क्रोधित हुआ. "वो मेरा घर है! मैं अपनी पूरी जिंदगी यहीं रहा हूं. देखो, तुम एक धोखेबाज हो," वो चिल्लाया.



Soon all the animals in the forest gathered. They had known the partridge for several years and they all took her side.

"This is the house of the partridge," they all cried.





जल्द ही वहां पर जंगल के सभी जानवर इकट्ठे हो गये. वे तीतर को कई वर्षों से जानते थे और वे सभी उसका पक्ष ले रहे थे.

"यह तीतर का घर है," वे सभी चिल्लाये.





Then the rabbit said, "A house belongs to whoever that makes it their home. I have made this my home, so it is my house."

तब खरगोश ने कहा, "घर उसी का होता है जो उसे अपना घर बनाता है. क्योंकि मैंने इसे अपना घर बनाया है, इसलिए वो मेरा घर है."

When the animals heard this, they were very confused. What the rabbit said was correct too.

Now they did not know whom to support. They all stood wondering what to do.

जब जानवरों ने यह सुना तो वे बहुत भ्रमित हुए. खरगोश ने जो कहा, वो भी सही था.

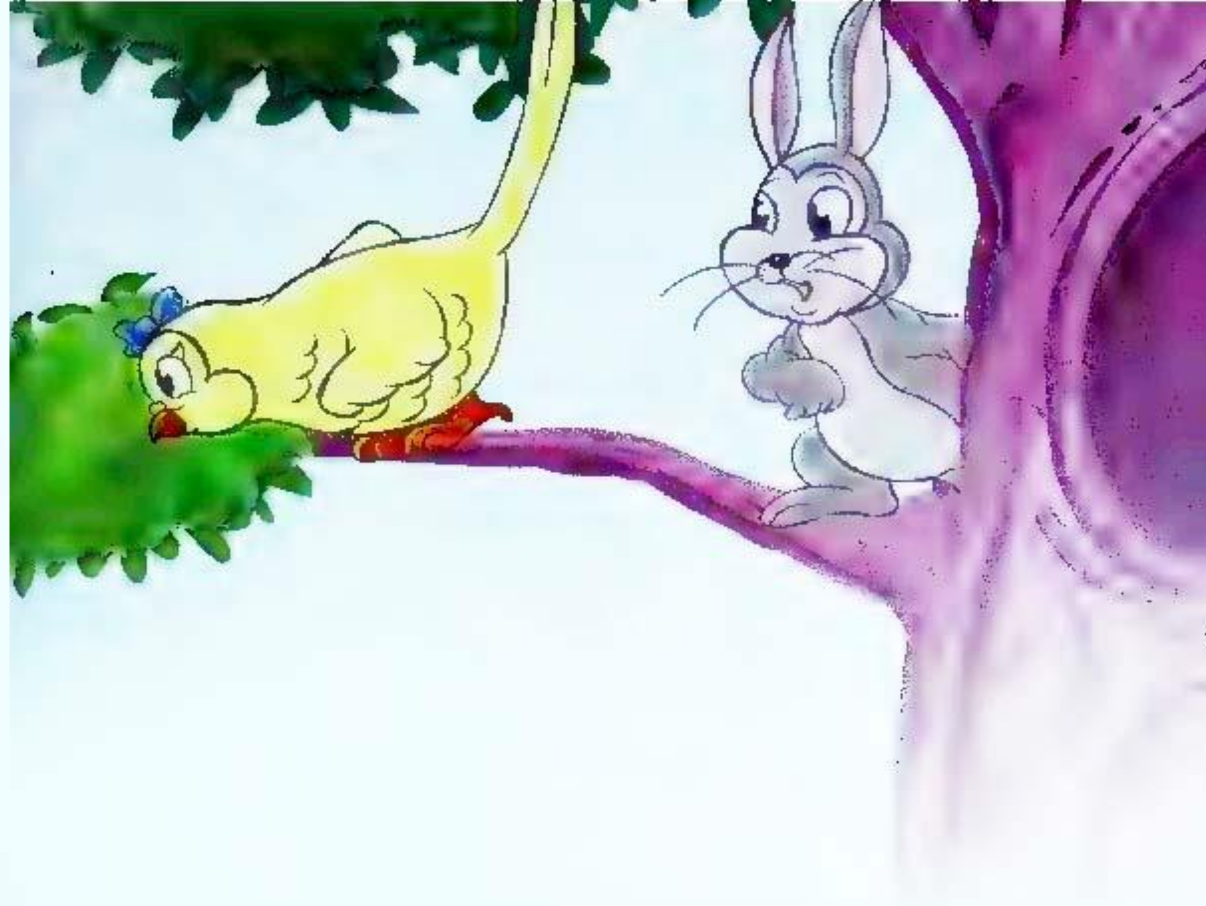
अब उन्हें समझ में नहीं आया कि वे किसका समर्थन करें. वे सब सोचने लगे कि अब वे क्या करें.



Finally a wise old deer in the forest said, "The two of you should go and find an impartial judge to settle your dispute."

The partridge and the rabbit agreed and set out in search of an impartial judge.





अंत में, जंगल में एक बुद्धिमान बूढ़े हिरण ने कहा, "आप दोनों को अपना विवाद सुलझाने के लिए एक निष्पक्ष न्यायाधीश को ढूंढना चाहिए."

तीतर और खरगोश सहमत हो गए और एक निष्पक्ष न्यायाधीश की तलाश में निकल पड़े.

Finally, after having walked several miles, they found a wild cat sitting on the banks of a river.

They went up to him and asked him to judge their dispute. The wild cat agreed to do so and listened to the whole story.



अंततः कई मील चलने के बाद उन्हें एक नदी के किनारे एक जंगली बिल्ली बैठी हुई मिली.

वे उसके पास गए और उन्होंने उससे उनके विवाद पर न्याय करने को कहा. जंगली बिल्ली न्याय करने को तैयार हो गई और उसने पूरी कहानी सुनी.



Then he said, “I am old and cannot see and hear properly. Won’t you come a little closer so that I can understand you better?”



फिर जंगली बिल्ली ने कहा, "मैं बूढ़ी हूं और ठीक से देख-सुन नहीं सकती. अच्छा हो कि तुम मेरे थोड़ा पास आओ ताकि मैं तुम्हारी बातें अच्छे से समझ सकूं?"



The two went closer. As soon as they did, the cat pounced on them and ate them up.

If only the two had not trusted a stranger, they might have still been alive.

दोनों करीब आये. जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, बिल्ली उन पर झपट पड़ी और उन्हें खा गयी.

यदि दोनों ने किसी अजनबी पर भरोसा न किया होता, तो शायद वे अभी भी जीवित होते.



अंत